International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 142-144

क्षेमेन्द्र के लघुकाव्यों में प्रतिपादित व्यंग्यपरक सामाजिक संचेतना

विनोद कुमार [1], डॉ0 तरुण कुमार शर्मा [2]
[1] शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, अतर्रा पी0जी0 कालेज, अतर्रा, बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत।
[2] असि0 प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, अतर्रा पी0जी0 कालेज, अतर्रा, बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

संस्कृत–साहित्य के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र, लोक–कल्याणार्थ, बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय तथा परार्थसमर्पणाय की संस्कृति के प्रबल, प्रतिष्ठापक तथा अपनी उपदेशप्रधान एवं व्यंग्यपरक शैली से जन–जन को प्रभावित करने वाले, ग्यारहवीं शताब्दी में काश्मीर में जन्मे कविवर क्षेमेन्द्र एक ऐसे बहुआयामी कर्तृव्य के कवि है, जिन्होंने अपनी विविध विधामयी शैली के द्वारा संस्कृत–साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों को आलोकित किया है। उनके द्वारा छोटे बड़े लगभग चालीस काव्य अलग ग्रन्थों का सर्जन किया गया है।

'व्यंग्य' शब्द 'वि' उपसर्गपूर्वक 'अ†ज्' धातु से 'ण्यत्' प्रत्यय करके निष्पन्न हुआ है। अंग्रेजी का सेटायर (Satire) शब्द इसका समानार्थक है। 'सेटायर' शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच (Satire) अथवा लैटिन (Satura) से हुई है। किसी भी शब्द का रहस्यात्मक अर्थ या वृत्तानुगामी प्रहारमय व्य४जना व्यंग्य होती है। मूलतः किसी व्यक्ति या समाज की बुराई या न्यूवता को सीधे शब्दों में न कहकर उल्टे या टेढ़े शब्दों में व्यक्त करना 'व्यंग्य' है बोल चाल की भाषा में इसे 'ताना' भी कहते हैं। वस्तुतः हास्य, व्यंग्य, अधिक्षेप एवं अपदेश आदि शब्द मुख्य रूप से व्यंग्य तथा अधिक्षेप के ही परिचायक है।

पाश्चात्य आलोचकों की दृष्टि में व्यंग्य एक साहित्यिक विधा है जिसको अपना कर साहित्यकार अपने समसामयिक समाज पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तथा अपने मन्तव्यानुसार उसकी आलोचना करता है। उनका कहना है कि ''व्यंग्य अपनी साहित्यिक विधा के रूप में परिहासास्पद अथवा विशेष व्यक्ति के प्रति खिल्ली उड़ाने अथवा चोट पहुँचाने की प्रहारात्मक अभिव्यक्ति है। साहित्यिकता एवं हास्य उसके अवयव हैं।[1] ''ऐसी साहित्यिक रचना जो मानवीय एवं व्यक्तिगत दोषों, मूर्खताओं एवं अभावों को निन्दा, उपहास, आलोचना, वक्रोक्ति आदि के माध्यमों के द्वारा रोकती है इसके साथ–साथ वह कभी–कभी सुधार के आशय से की जाती है व्यंग्य कहलाती है।''[2]

दूसरे शब्दों में व्यंग्य एक कठोर एवं कटु साहित्यिक हथियार है, जिसे समाज की विभिन्न बुराइयों के विरुद्ध प्रयोग किया जाता है। संस्कृत काव्यशास्त्र में मूलतः 'व्यंग्य' शब्द व्य४जना शक्ति द्वारा ध्वनित गम्य अर्थ के लिए प्रयुक्त किया जाता है। ध्वनिवादी आचार्यों ने इसी अर्थ में इसका बहुशः प्रयोग किया है। इसी अर्थ के समानान्तर 'व्यंग्य' शब्द उपलक्षित अर्थ व्यंग्योक्ति अथवा परोक्ष संकेत अर्थ में भी इसका प्रयोग प्राप्त होता है। जो कहीं न कहीं पाश्चात्य प्रयाग के निकट पहुँच जाता है। उक्त मन्तव्यों की परिधि में क्षेमेन्द्र के व्यंग्य भी जाते हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अपने समाज के दूषित पक्षों एवं समाज का शोषण करने वाले विभिन्न वर्गों पर तीखा व्यंग्यमय प्रहार किया है। व्यंग्य की दृष्टि से यदि हम क्षेमेन्द्र के योगदान की चर्चा करें तो उनके काव्य में अन्तर्निहित व्यंग्यकार सबसे पहले और अधिक तीव्रता के साथ उभरकर सामने आता है। क्षेमेन्द्र समाज के एक ऐसे चौराहे पर खड़े प्रतीत होते हैं जहाँ विभिन्न वर्गों की राहें आकर मिलती है। वे एक युग–द्रष्टा के रूप में सबको देखते हैं और उन पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं तथा के दूषित पक्षों पर व्यंग्य या अधिक्षेप करते हैं और अपने साहित्य को समाज के शस्त्र के रूप में प्रयुक्त करते हैं। उनका व्यंग्य रूपी बाण जिधर भी घूम जाता है उधर अति कठिन लक्ष्यों का भेदन कर डालता है। उनके व्यंग्य प्रहारात्मक होते हुए भी समाज सुधार की भावना से परिपूर्ण है। क्षेमेन्द्र अपने युग के भ्रष्ट समाज से इतने असन्तुष्ट दिखलाई पड़ते है अतः इन्होंने समाज को सुधारने के लिए दुष्टता के स्थान पर शिष्टता की, तथा कुविचारों के स्थान पर सद्विचारों की स्थापना के निमित्त लोगों पर प्रहार हेतु व्यंग्यप्रधान शैली का प्रयोग करते हुए तात्कालिक समाज के प्रति अन्तर्वेदना व्यक्त करते हुए कहा है–

खलेन धनमत्तेन नीचेन प्रभविष्णुना।
पिशुनेन पदस्थेन हा प्रजे क्व गमिश्यसि।।[3]

क्षेमेन्द्र के व्यंग्यों के विषय में यदि विचार किया जाय तो उनके काव्यों में तत्कालीन समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार में लिप्त समाज के अनेकानेक शोषण करने वाले वर्गों पर तीखा व्यंग्य देखने को मिलता है। यद्यपि कायस्थ वर्ग ही विशेषतया उनके काव्यों में, व्यंग्य बाण का लक्ष्य बना है तथापि दुर्जन, वेश्या, वैद्य, छात्र, कदर्य (कंजूस) ज्योतिषी, कुट्टनी तथा संन्यासी इत्यादि पर भी तीखे व्यंग्य देखने को मिलते हैं। इनके द्वारा विभिन्न वर्गों पर किये गये व्यंग्य क्रमशः इस प्रकार हैं–

क्षेमेन्द्र ने समाज के शोषकों में मुख्य अंग दुर्जन पर तीखा व्यंग्य किया है। उन्होंने दुर्जन को सदा छाँटने (खण्डन) में कुशल, बहुत से दोषों एवं व्यर्थ की बातों से भरा हुआ कहकर उसकी तुलना ओखली से करते हुए उसे व्यंग्य रूप में नमस्कार किया है–

सदा खण्डनयोग्याय तुषपूर्णाशयाय च।
नमोऽस्तु बहुबीजाय खलायोलूखलाय च।।[4]

क्षेमेन्द्र का कथन है कि दुर्जन व्यक्ति मूर्ख होकर भी विद्वान होता है क्योंकि वह अपने गुणों का वर्णन करने में शेषनाथ के समान तथा दूसरों की निन्दा करने में बृहस्पति के समान होता है–

अहो बत खलः पुण्यैर्मूखोऽप्युरतपण्डितः।
स्वगुणोदीरणे शेषः परनिन्दासु वाक्पतिः।।[5]

उन्होंने दुर्जुन को स्वभाव से ही मायामय, रागद्वेष और मद से भरा बड़े व्यक्तियों को भुलावे में डालने वाला बतला कर उस पर तीखा व्यंग्य इस प्रकार किया है–

मायामयः प्रकृत्यैव रागद्वेषमदाकुलः।
महतामपि मोहाय संसार इव दुर्जनः।।[6]

इस प्रकार उनके काव्यानुशीलन से स्पष्ट है कि क्षेमेन्द्र ने अपनी व्यंग्य प्रधान शैली एवं तीक्ष्ण शब्दों के माध्यम से दुर्जनों पर व्यंग्य किया है जो वस्तुतः दुर्जनों का नग्न चित्र ही है।
वेश्याएँ जो समाज के धन सम्पन्न लोगों एवं युवा वर्ग के लोगों को अपने प्रणय–पाश में फंसाकर उनकी धन सम्पत्ति का हरण करती है। क्षेमेन्द्र ने व्यंग्य करते हुए उनके दुर्गुणों को बतलाकर उन पर तीखा व्यंग्य किया है तथा उन्होंने वेश्याओं के प्रच्छन्न प्रयोजन को समाज के सामने नग्न रूप में चित्रित करते हुए तात्कालिक समय में उनके छल–कपट कला–प्रियता तथा लूट–खसोट इत्यादि सभी पक्षों पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होंने वेश्याओं को नीचों की सम्पत्ति का भोग करने वाली, सदाचार से विरत, दुर्जन की दुःख देने वाली लक्ष्मी कर तरह चंचल एवं व्यसनकारिणी बताया है–

नीचापभोग्यविभवा, सदाचारपराङ्मुखी।
दुर्जनश्रीरिव चला, वेश्या व्यसनकारिणी।।[7]

क्षेमेन्द्र ने सौ वर्ष तक साथ रहने पर भी वेश्या के प्रेम को बनावटी बताया है तथा साथ छूटते ही शुक की तरह शीघ्र भाग जाने वाली बताया है–

अति वर्षशतं स्थित्वा सदा कृत्रिमरागिणी।
वेश्या शुकीव निःश्वासा निःसंगेभ्यः पलायते।।[8]

वेश्याओं द्वारा दिखाये गये हाव–भाव, प्रेम–व्यवहार व स्नेह आदि सभी कृत्रिम हुआ करते है ऐसा कहकर क्षेमेन्द्र ने व्यंग्य किया है–

कृत्रिमं दृश्यते सर्वं चित्तसद्भाववर्जिता।
सूत्रप्रोतेव चपला नर्तकी यन्त्रपुत्रिका।।[9]

वेश्याएँ तात्कालिक समाज में बहुत से लोगों को अपने कपटपूर्ण प्रेम–जाल में फंसाकर उनके तन–धन का शोषण करती थीं। इसीलिए कविवर क्षेमेन्द्र ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में वेश्याओं पर व्यंग्य के माध्यम से उनके कपटपूर्ण आचरण व व्यवहार को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।
क्षेमेन्द्र ने तात्कालिक दम्भी छात्रों पर भी व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया है। उन्होंने भारत के अनेक भागों से आये ऐसे छात्र धर्मशास्त्र के अध्ययन के लिए कश्मीर आते हैं जो ज्ञान की अपेक्षा भोजन में अधिक रुचि लेने लगते हैं और धर्मशास्त्राध्ययन के बावजूद भी देवताओं की अपेक्षा गणिकाओं (वेश्याओं) में आसक्ति विकसित करने लगते हैं, पर व्यंग्य बाणों की बौछार कर उनके दूषित पक्ष का पर्दाफाश किया है।
सर्वप्रथम क्षेमेन्द्र ने विद्यालय में सदा बायीं ओर स्त्री को बैठाने वाले, क्रोधी, विषैले, उग्रविष भोगी तथा तीखा त्रिशूल धारण करने वाले छात्रों को व्यंग्य रूप में नमस्कार किया है–

नमश्छात्राय सततं सत्रे वामार्धहारिणे।
उग्राय विषभक्षाय शिवाय निशि शूलिने।।[10]

क्षेमेन्द्र ने ऐसे छात्र जो वेश्यासक्त द्यूतादि कर्मों में लिप्त रहकर चारों आश्रमों में से एक भी आश्रम का पालन नहीं करते थे तथा न करने योग्य भोजन करते थे, पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है–

न ब्रह्मचारी न गृही न वानस्थो न वा यतिः।
प४चमः प४चभद्राख्यश्छात्राणामयमाश्रमः।।[11]

इस प्रकार कविवर क्षेमेन्द्र ने तात्कालिक छात्रों के दूषित पक्ष को उनके सामने रखकर उनके सुधार हेतु प्रयास किया है जो इनके साहसिक कार्य का प्रतीत कहा जा सकता है।
क्षेमेन्द्र ने संन्यासियों पर भी तीखा व्यंग्य करते हुए उनके कपटपूर्ण बाह्य मिथ्या वेशों को निरर्थक बताया है। इनके सम्बन्ध में विचार कर क्षेमेन्द्र पाते हैं कि उन्होंने जिस वस्तु का त्याग किया है वह केवल उनके मुड़े हुए सिरों के केशमात्र ही हैं वासना का त्याग नहीं। ये धूल के रंग के पीले परिधान धारण करते हैं जो क्षेमेन्द्र को इनके हृदय के कालुष्य का प्रतीक प्रतीत होते हैं–

सरागकाषायकषायचित्तं शीलांशुकत्यागदिगम्बरं वा।
लौल्योभ्दवभ्दस्मभरप्रहासं व्रतं न वेषोभ्दटतुल्यवृत्तम्।।[12]

ज्योतिषी जो स्वभाव से सरल विभिन्न व्यक्तियों को मनोनुकूल विचारों को कहते हुए तथा उन्हें विभिन्न प्रकार से विश्वस्त करता हुआ धनार्जन करता है। वह साधारण एवं कपटपूर्ण ज्ञान से युक्त होकर ज्योतिष की गणना करता हुआ मूर्ख लोगों को ठगता है। ऐसे ज्योतिषों पर क्षेमेन्द्र ने कटु व्यंग्य किया है जो मिथ्या मन्त्र बतलाकर निदान की बात करता है। सर्वप्रथम कविवर क्षेमेन्द्र ने ज्योतिषशास्त्र को जानने वाले वर्षा और सूखा के विषय के विषय में मछुए से पूछने वाले ज्योतिषी को व्यंग्य रूप में नमस्कार किया है।

ज्योतिः शास्त्रविदे तस्मै नमोऽस्तु ज्ञानचक्षुषे।
वर्षं पृच्छत्यवर्षं वा धीवरान् यो विनष्टधीः।।[13]

क्षेमेन्द्र ने ऐसे ज्योतिषियों पर भी व्यंग्य किया है जो स्त्रियों को भूत पिशाचादि से ग्रस्त बतलाकर उन्हें नग्नादि अवस्था में कर पिशाच मुक्त करने का उपाय बताता है–

दुर्निवारश्च नारीणां पिशाचो रतिरागकृत्।
पुनः शून्यगृहे स्नाता गुह्यकेन निरम्बरा।।[14]

छद्मरूपी ज्योतिषियों द्वारा समाज के रूढ़िग्रस्त, भयभीत भोले–भाले स्त्री पुरुषों का किस तरह शोषण किया जाता है और किस तरह स्त्रियों को अपने शील तक का शोषण कराने के लिए विवश होना पड़ता हैा इसका यथार्थ चित्रण कवि ने किया है। यही क्षेमेनद्र की यथार्थ दृष्टि है।
कविवर क्षेमेन्द्र ने तात्कालिक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार में लिप्त तथा कलम (लेखनी) की नोंक से लोगों के धन का शोषण करने वाले तथा अपनी माया से समस्त संसार को मोह लेने वाले अजित कायस्थ को व्यंग्य रूप में परमेश्वर कहा है–

येनेदं स्वेच्छया सर्वं मायया मोहितं जगत्।
स जयत्यजितः श्रीमान् कायस्थः परमेश्वरः।।[15]

एक स्थल पर क्षेमेन्द्र ने कायस्थ को सेवा काल में विभिन्न बातों के द्वारा लोगों को लुभाने तथा ठगने में बहुरूपों वाला बतलाते हुए इस

प्रकार कहा है–

सेवाकाले बहुमुखैर्लुब्धकैर्बहुबाहुभिः।
व४चने बहुमायैश्च बहुरूपैः सुरारिभिः।।[16]

इस प्रकार, कायस्थों की ठगने की विभिन्न विधाओं को कला की संज्ञा देते हुए क्षेमेन्द्र ने उनकी ठगी का चरमोत्कर्ष रूप में पर्दाफाश किया है तथा उनको अपने व्यंग्य बाण का लक्ष्य बनाया है।

इस प्रकार इनके अतिरिक्त भी क्षेमेन्द्र ने समाज के अन्य वर्गों व जातियों में विद्यमान दोषों पर भी तीखा व्यंग्य किया है। उन्होंने स्वर्णकाल, कुट्टनी, कुलवधू, गुरु, वणिक, कवि, धातुवादी, निर्गुट, पण्डित, जटाधर तथा लेखक आदि लोगों के दूषित पक्षों पर भी तीखा व्यंग्य किया है जो उनके सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरीक्षण का प्रतिफल हो सकता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि क्षेमेन्द्र द्वारा समाज के शोषकों व दूषित पक्षों पर किये गये व्यंग्यपूर्ण वर्णन उनके लघुकाव्यों में पदे–पदे परिलक्षित होते हैं। तात्कालिक समाज में दूषित पक्ष दबने की अपेक्षा उग्र रूप धारण किया हुआ था। क्षेमेन्द्र के द्वारा किये गये व्यंग्य बहुत ही तीखे एवं हृदय को भेदने वाले हैं फिर भी इनकी भावना मुख्यतः समाज सुधारक के रूप में हमारे सामने आती है। क्षेमेन्द्र ने समाज में व्याप्त दूषित लोगों, तरीकों, प्रथाओं व व्यवसायों पर गृध्र–दृष्टि से अवलोकन कर उन पर तीखा व्यंग्य किया है तथा जिसके माध्यम से तात्कालिक समाज के दूषित पक्षों का पूर्णतः पर्दाफाश किया है, उनके नग्न चित्र लोगों के सामने उपस्थित किये हैं, जो उनका तात्कालिक समाज को सुधारने का सफल प्रयास ही है। उनके सामाजिक व्यंग्यों में यथार्थता, स्पष्टता एवं मौलिकता पूर्णतः विद्यमान है। परिणामतः व्यंग्य की दृष्टि से इनके काव्य सहृदय के हृदय को बरबस आकृष्ट करते हैं। बहुमुखी कर्तृत्वशक्ति से सम्पन्न क्षेमेन्द्र के सामाजिक व्यंग्य संस्कृत–साहित्य में सदा स्मरणीय, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय रहेंगे।

संदर्भ

1. 'एनसाइक्लोपेडिया ब्रिटानिका', खण्ड 20, पृ. 5
2. 'आक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी', खण्ड 9, पृ. 119
3. देशोपदेश 1/7
4. देशोपदेश 1/5
5. देशोपदेश 1/9
6. देशोपदेश 1/12
7. देशोपदेश 3/3
8. देशोपदेश 3/9
9. देशोपदेश 3/11
10. देशोपदेश 6/1
11. देशोपदेश 6/32
12. नर्ममाला 7/13
13. नर्ममाला 2/82
14. नर्ममाला 2/91
15. नर्ममाला 1/1
16. नर्ममाला 1/23